International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 02(II), April- June, 2025, pp. 129-134

समकालीन भारतीय चित्रकला में महिला चित्रकारों का योगदान

विजेयता चारण[1] | रेवंत दान[2]*

[1]सहायक आचार्य, चित्रकला, राजकीय मूक बधिर महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
[2]सहायक आचार्य हिन्दी, कस्तूरी देवी कॉलेज चाकसू, जयपुर, राजस्थान।

*Corresponding Author: rewantdan@gmail.com

सार

समकालीन चित्रकला को आज विविध स्तर पर विविध माध्यमों से देखा जाता है और यह जटिल भी है। जिस तरह आधुनिक कला की शुरूआत की कोई निश्चित तिथि नहीं मानी जाती है। हालांकि सामान्य तौर पर यह माना जाता है कि आधुनिक कला ने उन्नीसवीं शताब्दी उत्तरार्ध में एक आंदोलन का रूप लिया था। समकालीन चित्रकार ने मनोवैज्ञानिक जानकारी में बढ़ोत्तरी के साथ समसामयिक दुनिया को दर्शाने के साथ उसे नया आयाम प्रदान किया। नये चित्रकार ने पारंपरिक चित्र संरचना का त्याग कर दिया इससे चित्रमय कार्य व्यापार कभी–कभार भग्न अथवा अस्त–व्यस्त ढंग से समकालीन जीवन के नजदीक आने लगा। चित्रकार ने अपने मिथक खुद रचे, उसने अपने निजी अनुभव तथा वातावरण का नवीन प्रबोधक रीति से रूपांतरण कर दिया।

शब्दकोश: *भारतीय चित्रकला, महिला चित्रकार, मनोवैज्ञानिक जानकारी, समसामयिक दुनिया, नवीन प्रबोधक रीति।*

प्रस्तावना

भारत में आजादी के बाद से आज तक की चित्रकला परिदृश्य पर नजर डालें तो कई सारे परिवर्तन देखने को मिलते हैं। विशेषकर समकालीन भारतीय चित्रकला में पाश्चात्य अकादमिक प्रभाव के साथ आधुनिक कला के विभिन्न वादों यथा – अभिव्यंजनावाद, अमूर्तवाद, घनवाद और निर्वस्तुवाद से प्रेरणा ली है।

प्राणनाथ मागो समकालीन भारतीय चित्रकला के बारे में लिखते हैं – "आज कलाकार अपनी निजी अभिव्यक्ति को ज्याद महत्व देता है। उसने स्वयं को कला के लिए निर्धारित 'मानकों' या अन्य प्रतिबंधों से मुक्त कर लिया है। यूरोप के कला–परिदृश्य में जो कल हुआ था, वह भारत में आज होता दिख रहा है।"[i]

समकालीन चित्रकला के मायने बदल गये हैं, अब इसे जन–मनोरंजन के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाता है, बल्कि कला में जो उत्तर आधुनिकता की शुरूआत हुई थी, वह अब चित्रकला में भी नजर आ रही है जिसे समकालीन चित्रकारों की कलाकृतियों में देखा जा सकता है।

आधुनिक भारतीय चित्रकला के इतिहास पर गौर करें तो हम पाएंगे कि बीसवीं सदी में कला जगत में महिला चित्रकारों का पदार्पण होता है, इससे पूर्व भी महिला चित्रकार सक्रिय थीं मगर व्यापकता के साथ नहीं।

आधुनिक भारत की चित्रकला में महिला चित्रकारों की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है।

"आजादी के बाद समकालीन भारतीय कला में महिला कलाकारों का योगदान अलग से रेखांकित किया जाना चाहिए। पश्चिमी कला के इतिहास में बहुत लंबे समय तक महिलाएं कला की दुनिया में उपेक्षित रही हैं। बीसवीं शताब्दी में धीरे–धीरे उनकी एक पहचान बनी है। पर भारत में यह बात महत्वपूर्ण है।"[ii]

आजादी के बाद आधुनिक भारतीय चित्रकला की एक बड़ी उपलब्धि महिला–चित्रकारों की दमदार उपस्थिति मानी जाती है।

देवयानी कृष्ण, पील्लू पोचकानवाला, मीरा मुखर्जी, नसरनी मोहम्मदी, अर्पिता सिंह, अंजोली ईला मेनन, माधवी पारेख, अनुपम सूद, नीलिमा शेख, गोगी सरोजपाल, नलीनी मालिनी, लतिका कट, नवजोत और अपर्णा कौर जैसे नाम यह अच्छी तरह साबित करते हैं कि अमृता शेरगिल के देश में महिला चित्रकारों का एक रचनात्मक समूह सक्रिय रहा।

समकालीन भारतीय चित्रकला में महिला चित्रकारों ने पश्चिमी कला के साथ–साथ भारतीय कला की अमूल्य धरोहर को पहचानने की कोशिश की। परिणामस्वरूप आधुनिक भारतीय कला में महिला चित्रकार स्वयं को ज्यादा आश्वस्त अनुभव करती रही। भारतीय लोक चित्रकला में भी महिला चित्रकारों की अहम भूमिका रही है।

प्रमुख समकालीन महिला चित्रकार और उनके कलाकर्म का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत है।

देवयानी कृष्ण

समकालीन भारतीय महिला चित्रकारों में देवयानी कृष्ण विशिष्ट कलाकार है। कला की अपनी सीमाओं के बावजूद उनकी पेंटिंग्स के रंग दर्शकों को आकर्षित करते हैं और मायावी दुनिया की सैर कराते हैं।

"देवयानी कृष्ण के चित्र 'वॉर' (हार्ड बोर्ड पर तेल रंग से) सामान्य दुनिया के चित्र हैं किन्तु ऐसे प्रतीकों वाले हैं जो न सामान्य हैं और न व्यक्तिगत हैं, न ही ये किसी सम्बद्ध हैं।"[iii]

देवयानी कृष्ण अपने पति के साथ कई बार हिमालय की यात्रा पर गई। उन्हे ऐसा लगता था कि हिमालय बार–बार उन्हें पुकार रहा है। यह एक चित्रकार की संवेदनशीलता को दर्शाता है। हिमालय की यात्रा का प्रभाव ही था कि उनके चित्रों में हिमालयी परिवेश, बौद्ध संन्यासियों का जीवन, बौद्ध पूजा स्थल, तिब्बत जनजीवन, लामा साधुओं और तिब्बती मुखौटों का चित्रण मिलता है।

उन्होंने दैत्याकार रूपों को मानवीय छवियों में अंकित किया है। "देवयानी ने अरबी लिपि में 'अल्लाह' लेख का छायाचित्र बनाया जो एकाएक सम्पन्न कार्य था, जिसे देखकर वह स्वयं भी चकित हो गई थी। इसके उपरांत उन्हेांने विभिन्न रंगों में इसकी पूरी श्रृंखला ही बना डाली। इस तरह 'अल्लाह' नामक संपूर्ण श्रृंखला निर्मित हुई।

अल्लाह नामक इस श्रृंखला की तुलना अमरनाथ की गुफा की छवि से की जा सकती है, जो हमें आध्यात्मिक अनुभूति करवाता है। "यह कार्य निरन्तर छापा चित्रण करने का और विभिन्न भाषाओं में केलीग्राफी करने का परिणाम था।"[iv]

देवयानी कृष्ण की कला के प्रति समर्पणशीलता के बारे में लिखते हुए अजीत कुमार दत्ता लिखते हैं कि "देवयानी कृष्ण का जीवन कला में इस तरह रमा हुआ था कि उनकी प्रकृति और आसपास के परिवेश से परिलक्षित होता था। सत्तर पार करने के बाद भी कला के प्रति जुनून कम नहीं हुआ।[v]

नसरीन मोहम्मदी

समकालीन महिला चित्रकारों में अमूर्त चित्रण करने वालों में नसरीन मोहम्मदी का प्रमुख नाम है। उन्होंने जितना अमूर्त चित्रण किया है उतना महिला चित्रकारों में और किसी ने नहीं किया है। हालांकि उनका अधिकतर चित्रकर्म अमूर्त है लेकिन विरोधाभास में रहस्यमयी देहयष्टि, क्षत–विक्षत देह, महिला देह और कला में भी देह की प्रमुखता है जो उन्हें अमूर्त से मूर्त की तरफ जोड़ती है। नसरीन मोहम्मदी के चित्रण के बारे में नेवल टूली लिखते हैं कि "उनके चित्रण की प्रेरणा की दृश्य से नहीं है, पर देखने में हर कहीं के दृश्य नजर आते हैं, उनके चित्रों में शरीर अदृश्य रूपों में (लाईन्स में) उपस्थित है। जैसा कि हम जानते हैं कि शरीर क्षणभंगुर है और धीरे–धीरे अपनी क्षमताएं खो देता है।"[vi]

नसरीन अमूर्त भाषा की उदात्त छवियां अपने कल्पनलोक में बनाती हैं। इन छवियों को वह अपने चित्रों में उकेरने में सफल रही है।

1980 में वह अपनी डायरी में लिखती हैं – एक दिन सारी चीजें कार्यात्मक हो जाएंगी जो कि एक अच्छा डिजायन होगा। तब कोई भी चीज अनुपयोगी नहीं होगी। तब हम उस आधारभूत चीजों को समझ पाएंगे, लेकिन ऐसा होने में समय लगेगा। इस दौरान हमारे धर्म के लिए एक अवसर होता है।"[vii]

अर्पिता सिंह

समकालीन भारतीय महिला चित्रकारों में रेखांकन करने वाली कलाकारों में अर्पिता सिंह का नाम प्रमुख है। इनके रेखाचित्र दर्शक को अत्यन्त आकृष्ट करने वाले होते हैं। इन्होंने जलरंग में अपना चित्रकर्म उत्कृष्ट तरीके से किया है। अर्पिता ने अपने चित्रों में लोगों और चीजों की बहुतायत दर्शाई है। उनके चित्रों में बिन्दु और अन्य पैटर्न में, ध्वज, गुलदस्ते, पक्षी, खिलौने इत्यादि ज्यादा दिखते हैं।

अर्पिता सिंह का अपने चित्रों में भारतीयता को दर्शाने का इतना आग्रह नहीं रहता है। इसके लिए वह अतिरिक्त प्रयास करके तनाव महसूस नहीं करती है उनका मानना है कि भारतीयता उनके जीवन में समाहित है। अतः उनकी कला में भी स्वतः होगा। अर्पिता अपनी कला में राजनीति और समाज यथार्थ को संवदेनशीलता के साथ महसूस करती है और गहनता से इसका अंकन करती है।

"दिल्ली में 1982 की प्रदर्शनी के अधिकांश चित्रों को बनाने के दौरान अर्पिता सिंह के दिमाग में बेरूत का नरसंहार रहा। कारण? एक महिला पत्रकार मित्र के अनुभवों को उन दिनों कई बार सुना था। अब उन दिनों की मनःस्थिति थी। जाहिर है अर्पिता सिंह की कला पर इस अनुभव का असर पड़ा ही।[viii]

उनके चित्रों में हास्य अभिव्यक्ति के अलावा दुःस्वप्न की अनुभूति, विचित्र गतियों ओर मुद्राओं के साथ–साथ शहरी जीवन के विशेष अभिप्रायों की अधिकता के साथ कैनवास पर अंकित होता है।

माधवी पारेख

माधवी पारेख नयी पीढ़ी के कलाकारों में हैं जो आधुनिक होते हुए ठेठ देहाती परिवेश से जुड़े हुए होते हैं।

माधवी पारेख ने चित्रकारिता शादी के उपरान्त प्रारम्भ की और अपनी पेंटिंग्स को आधुनिक कला गैलेरी के लिए भेजा। आज माधवी आधुनिक भारतीय चित्रकारों में एक सम्मानित नाम हैं।

माधवी ने एक सामान्य गृहिणी जीवन के साथ जीवन की ऊब और एकरसता को तोड़कर सृजन को चुना। आज माधवी को देश–विदेश में अपने काम के लिए जाना जाता है।

"माधवी को पेंटिंग का राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है, अनेक एकल प्रदर्शनियां आयोजित हो चुकी हैं, कला विशेषज्ञ उनकी कलाकृतियों के महत्व को समय–समय पर स्वीकार कर चुके हैं लेकिन माधवी ने अपने को सतही स्तर पर 'मुक्त' न करके सच्चे अर्थों मे 'मुक्त' किया है।"[ix]

माधवी पारेख ने कला की कोई विधिवत और औपचरिक शिक्षा नहीं ली है। उन्होंने कला का हुनर अपने पति मनु पारेख से सीखा है। उनकी कला पर पॉल क्ली का प्रभाव है। "उनके चित्रों में लोक कला का प्रभाव है, पर वे अपने चित्रों के नमूने लोक कला से ग्रहण नहीं करती हैं। उनके चित्र लोककला के जैसे सजावटी भी नहीं है, बल्कि वे बहुत समकालीन और आधुनिक आकार लिये हुए हैं। इन आकारों से चित्रों में अलंकरण का आभास होता है।"[x]

अनुपम सूद

अनुपम सूद समकालीन छापा चित्रकारों में प्रमुख नाम है। वो एक्रिलिक में बड़े कैनवास पर चित्र बनाती हैं, पर वे इंटेगलियों प्रिंटस के लिए श्रेष्ठ मानी जाती है।

"उनका रंगीन इंटेगलियों प्रिंट ऑटम एक ऐसी ही सुगठित कृति है, परन्तु उसके चेहरे पर संतुष्टि के भाव न होकर चिंता के भाव है। चेहरे की भाव भंगिमा जो उनके प्रिंटस जैसे 'एडम एण्ड इव' तथा 'पुरुष और प्रकृति' में है, काफी चिंताग्रस्त है तथा ये सभी एक स्वतंत्र व्यक्ति के दुखांत अस्तित्व से जुड़ी है।"[xi]

अनुपम सूद पिछले दो दशकों से ज्याद समय से सामग्री, रंगों, रूपाकारों और साथ ही अवधारणाओं व विचारों का भी स्वरूप बदलने की दिशा में प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने छाया चित्रण की जिस तकनीक को अपनाया है, उसे इन्टैग्लियो की कोटि में रखा जाता है। इसमें एचिंग ड्राई प्वाइंट, मैजोटिंट, एक्वाटिंट इत्यादि शामिल है।

नीलिमा शेख

समकालीन महिला चित्रकारों में नीलिमा शेख की कला में लघु चित्रों की वैचारिकी कविता जैसे भाव दिखाई देते हैं।

सत्रहवीं शती के जापानी काष्ठ छापाचित्र की संयोजन स्पष्टता और मनस्थिति है। साथ ही छवि सादृश्य भी है जैसे जानवर, पेड़ पौधें को बनाने में। उनके चित्रों में विषय और शैली का समन्वय दिखाई देता है।

"एक आकार जो उनके चित्रों में बार–बार आता है, वह है झुकी हुई महिलाएं कपड़े धोते हुए, बर्तन घिसते और मिठाई की दुकान पर बच्चे, एक पुराने तरह की दवा की दुकान। उनके चित्र में व्हेन चंपा ग्रुप में जापानी शैली के रेखांकन का प्रभाव देखा जा सकता है।"[xii]

उनके चित्रों में लघुचित्रों की विशेषता होती है। कहानी के कई हिस्से एक ही चित्र तल को बहुत सरे भागों में बांटकर दर्शाना। जैसे हम्जानामा उनका चित्र वॉक फुल नाईट में कई चित्र तल एक ही चित्र तल को बांटकर बने हैं।

गोगी सरोजपाल

गोगी सरोजपाल सत्तर–अस्सी के दशक के दौरान उभरी प्रतिभाशाली चित्रकारों में से एक है जिन्होंने पेंटिंग और ग्राफिक विधाओं में नई जमीन तलाशी।

गोगी अपने स्पष्ट विचारों और जीवन शैली के कारण दूसरी महिला चित्रकारों से अलग पहचान रखती है।

गोगी के चित्र अपने समय और समाज के सरोकार का चिंतन करते हुए दिखाई देते हैं।

"1987 में दिवराला के सतीकांड पर देश भर में उद्वेलन था। गोगी ने अपनी नई चित्र श्रृंखला में इस 'बहस' को ध्यान में रखकर अनेक चित्र बनाए जिसमें अनेक चित्रों में पुरुष बैठे हुए हैं और सामने मेज पर एक स्त्री औंधी पड़ी है।"[xiii]

नलिनी मालानी

समकालीन महिला चित्रकारों में जिनकी पेंटिंग में मध्यमवर्गीय शहरी जीवन का प्रतिबिंब नजर आता है, नलिनी मालानी के चित्रों में ऐसी छवियां बहुतायत में मिलती हैं। इनके चित्रों में शहरी जीवन का समाज, राजनीति और मनःस्थिति के साथ आत्मकथात्मक चित्रण हुआ है। शहरी वर्ग से जुड़े हुए सारे विषय इनकी पेंटिंग में समाहित हुए हैं।

"इनका ज्यादातर कार्य तैलरंग का है और चित्र काल्पनिक दुनिया से सम्बन्धित है, जैसे टुकड़ा–टुकड़ा के दृश्य हैं जो आकार रूप में एक दूसरे में गडमड होकर आच्छादित हो जाते हैं। छवियां भूतहा तरीके से प्रकट होती है और विलीन हो जाती है।"[xiv]

नलिनी की पेंटिंग में गरीबी, भूख और बेघर लोगों की तस्वीर कई बार विभिन्न पात्रों के माध्यम से प्रकट हुई है। जैसे उनके चित्र 'ऑफ मॉन्स्टर्स एण्ड एन्जैल्स, फ्लक्स ऑफ एक्सपिरियन्स' में इस तरह की छवियां व्यक्त हुई हैं।

नवज्योत अल्ताफ

नवज्योत अल्ताफ चित्र, रेखांकन, फोटोग्राफी, मूर्तिशिल्प, विडियों, इंस्टॉलेशन जैसी अनेक विधाओं में हस्तक्षेप रखती है।

उनके काम की प्रेरणा और विषय वर्तमान की सामाजिक, राजनीतिक सच्चाईयों में अभिरुचि से मिलती है।

नवज्योत की इतिहास के बारे में विशेष रूचि है। खासकर आदिम हस्तकला के बारे में। उन्होंने बस्तर क्षेत्र की कला से प्रेरणा ग्रहण की है।

"उनके ज्यादातर कार्य दर्शक से सवाल करते हैं और इससे भी ज्यादा संवाद करते नजर आते हैं।"[xv]

नवज्योत के कार्यों में नारी के उन्नत पक्ष को दर्शाया गया है। वे नारी की पारंपरिक छवि को तोड़ती नजर आती हैं। नवज्योत के कार्य में बुनाई जैसी औरतों की कला विधा भी है जिससे उससे संबंधित महिलाओं की सृजनात्मकता को अवसर देती है।

अर्पणा कौर

समकालीन भारतीय कलाकारों ने अपना विषय मध्ययुगीन क्रांतिकारी व्यक्तित्व को बनाया है, उनमें अर्पणा कौर प्रमुख हैं। अर्पणा के विकास में गुरू ग्रंथ साहिब का महत्वपूर्ण स्थान है।

दरअसल अर्पणा की कला समय और समाज सापेक्ष है, जीवन से जुड़ी हुई संदर्भगत सीमाएं और उनका स्वरूप बदलता रहता है। जिससे समय के अनुसार यथार्थ का सामना किया जा सके। "अर्पणा कौर का काम महिलाओं, बुद्धिजीवियों और कलाकारों में उभरती उस चेतना का प्रतीक है, जो न केवल अपने व्यक्तित्व को खोजना चाहती है और समाज के साथ नई तरह से जुड़ना चाहती है बल्कि कला में नई संवेदनाओं का विकास भी करना चाहती है।[xvi] अर्पणा की पेंटिंग का अनुभव उसकी आकृतिमूलकता, विषयवस्तु तथा चाक्षुष बिंबों के संदर्भ में किया जा सकता है।

समकालीन महिला चित्रकारों में कला कर्म पर विहंगम दृष्टि डालें तो यह कहा सकता है कि इन चित्रकारों ने नारी सशक्तिकरण में प्रमुख भूमिका निभाते हुए उसके अधिकारों की अभिव्यक्ति अपनी कला में प्रकट की हैं। चूंकि कला का दृश्य रूप अधिक सम्प्रेषणीय और प्रभावी होता है जिसका असर लंबे समय तक कायम रहता है।

समकालीन भारतीय महिला चित्रकारों के कला कर्म में मौलिकता और वैश्विक विचारधारा के साथ तादात्म्य दिखाई देता है। जहां एक ओर इनके चित्रों में पौराणिक, धार्मिक और आध्यात्मिक संदर्भ दिखाई देते हैं वहीं दूसरी ओर आधुनिक विचारधाराओं और नवीन दर्शन की संभावनाओं के प्रति झुकाव भी दिखाई देता है जो समय और बदलते हुए परिवेश के अनुसार कदमताल है।

विगत कई दशकों में आधुनिक भारतीय चित्रकला में कलात्मक जटिलता और विचारों के संवेग को महत्व दिया गया है। इस प्रकार समकालीन महिला चित्रकारों ने अपने ढंग से व्यक्तिगत मुहावरों को तलाश लिया और उसे कल्पनाशीलता के सहारे सहज रूप से व्यक्त करने में सफल रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 प्राणनाथ मागो, *भारत की समकालीन कला – एक परिप्रेक्ष्य,* पृ.सं. 47

2 भारद्वाज, विनोद, *बृहद आधुनिक कला कोश,* पृ.सं. 11

3 सिन्हा, गायत्री, *एक्सप्रेशंस एण्ड एवोकेशन्स, कंटम्परारी इंडियन वूमन आर्टिस्ट ऑफ इंडिया,* पृ.सं. 30

4 *वही,* पृ.सं. 32

5 दत्ता, अजीत कुमार, *कंवल कृष्ण एण्ड देवयानी कृष्ण – कंटम्परारी इंडियन आर्ट सीरिज,* पृ.सं. 9

6 सिन्हा, गायत्री, *एक्सप्रेशन्स एण्ड इवोकेशन्स, कंटम्परारी वूमन आर्टिस्ट ऑफ इंडिया,* पृ.सं. 67

7 मोहम्मदी, नसरीन, *नसरीन इन रेट्रोस्पेक्ट,* पृ.सं. 97

8 भारद्वाज, विनोद, *बृहद आधुनिक कला कोश,* पृ.सं. 214

9 भारद्वाज, विनोद, *बृहद आधुनिक कला कोश,* पृ.सं. 217

10 सिन्हा, गायत्री, *एक्सप्रेशन्स एण्ड एवोकेशन्स कंटम्परारी वूमन आर्टिस्ट ऑफ इंडिया,* पृ.सं. 97

11 कांजिलाल, काजल, *भारतीय कला का इतिहास,* पृ.सं. 172

12 सिन्हा, गायत्री, ए*क्सप्रेशन्स एण्ड एवोकेशन्स, कंटम्परारी वूमन आर्टिस्ट ऑफ इंडिया,* पृ.सं. 120

13 भारद्वाज, विनोद, *बृहद आधुनिक कला कोश,* पृ.सं. 208

14 सिन्हा, गायत्री, *एक्सप्रेशन्स एण्ड एवोकेशन्स, कंटम्परारी वूमन आर्टिस्ट ऑफ इंडिया,* पृ.सं. 136

15 फ्रॉस्ट आर्ट म्यूजियम, *नवज्योत अल्ताफ लैक्यूना इन टेस्टीमनी,* 2009

16 मागो, प्राणनाथ, *भारत की समकालीनता,* पृ.सं. 179

❖◆❖